UNIVERSITY GRANTS COMMISSION

CENTRAL REGIONAL OFFICE, BHOPAL – 462016

PROFORMA FOR SUBMISSION OF INFORMATION AT THE TIME OF SENDING THE FINAL REPORT OF THE WORK DONE ON THE PROJECT

1	Name and Address of Principal Investigator	-	Dr. Omprakash Patel LIG-II, 2409, MPHB, Bhilai (C.G.)
2	Name and Address of the Institution	-	Shri Shankaracharya Mahavidyalaya, Junwani, Bhilai
3	UGC approval No. and Date	-	F.No:MH-49/202081/XII/14-15/CRO Dated 16/06/2015
4	Date of Implementation	-	03 July -2015
5	Tenture of the project	-	2 Years (2015-16, 2016-17)
6	Total Grant allocated	-	Rs.2,50,000.00
7	Total Grant Received	-	Rs.1,70,000.00
8	Final Expenditure	-	Rs.2,56,461.00
9	Title of the project	-	Development of Libraries in durg district after enactment of public library Act (2008) in chhattisgarh: A critical study

10. Objectives of the project

- विद्यालय में पुस्तकालय की उपयोगिता का अध्ययन करना।
- विद्यालय में ग्रंथालयों की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
- जिले के विद्यालयों में संचालित ग्रंथालयों की प्रणाली का पता लगाना।
- कर्मचारी संरचना एवं वर्तमान ताकत (Strength) का पता लगाने हेतु।
- पुस्तकालय की वर्तमान संसाधन, संग्रह, कमजोरी एवं ताकत का पता लगाना।
- वर्तमान प्रौघोगिकी एंव आधुनीकीकरण को कितना अपनाया गया, ज्ञात करने हेतु।
- पुस्कालयों को प्राप्त बजट का आंकलन करने हेतु।
- पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं की भूमिका को ज्ञात करना।
- पुस्तकालय की वर्तमान स्थिति, पुस्तकों की उपलब्धता एवं उपयोग की स्थिति का अध्ययन करना।

11. Achievements of the project

1. छत्तीसगढ़ में पुस्तकालय अधिनियम 2008 में पारित हो चुका है और लगभग सभी हाईस्कूलों एवं हायर सेकेण्ड्री स्कूलों में पुस्तकालय नियमानुसार स्थापित किए गये है।
2. छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिलें में ग्राम पंचायतों की संख्या 297, गांवो की संख्या 388, हाई स्कूलों की संख्या 37 एवं हायर सेकेण्ड्री स्कूलों की संख्या 117 है।
3. छत्तीसगढ़ के विद्यालय के पुस्तकालयों के संपूर्ण विकास के लिए अध्ययन उपयोगी हो सकता है।
4. छत्तीसगढ़ के विद्यालय पुस्तकालय की अधोसरंचना एवं वास्तविक स्थिति को संबंधित अध्ययन दर्शाता है।
5. छत्तीसगढ़ के विद्यालय के पुस्तकालय सेवा की गुणवत्ता में वृद्धि हो रही है।
6. छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के स्कूलों के पुस्तकालय छात्रों के प्रति समर्पित है, और अध्ययन में देखा गया है कि शासन से वित्त की भी प्राप्ति होती है।

12. Summary of the Finding

भारत में अब तक 19 राज्यों से अधिक में सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम पारित हो चुका है, जिसमें से छत्तीसगढ़ भी इस सूची में शामिल हो गया है। सन् 2008 में राज्य सरकार ने सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम पारित कर इस दिशा में एक नये युग की शुरुवात की है। सार्वजनिक ग्रंथालय एक सामाजिक संस्था होते है जो निरंतर समाज कल्याण में रत रहते हुए विज्ञ और अविज्ञ को समान रूप से ज्ञान वितरित करते है। ग्रंथालय वास्तव में विद्या के भंडार होते है इसी आधार पर सार्वजनिक ग्रंथालय को समाज में लोक विश्वविद्यालय की संज्ञा दी जाती है जिसके द्वार समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुले रहते है। सार्वजनिक ग्रंथालय समाज की ज्ञान पिपासा को शांत करते है। कोई भी व्यक्ति आजीवन किसी भी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त नही कर सकता है, किंतु वह सार्वजनिक ग्रंथालय का सदस्य बनकर जीवन भर ज्ञान संवर्धन कर सकता है।

छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना 1 नवंबर 2000 को हुई है। छत्तीसगढ़ राज्य में शिक्षा की स्थिति इस प्रकार है– प्राथमिक शालाएं 35274, उच्चतर माध्यमिक शालाएं 15488, हाई सेकेण्ड्री स्कूल 2029, सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल 2799, 16 विश्वविद्यालय, लगभग 53 अभियांत्रिकी महाविद्यालय, 42 पॉलिटेक्निक कॉलेज, लगभग 250 महाविद्यालय, एक राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, एक राष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान एवं 09 चिकित्सा एवं 01 आई.आई.टी उच्च शिक्षा प्रदान कर रहें है।

युनेस्को के मनोफेस्टों में कहा गया है कि "पुस्तकालय शिक्षा के विकास के लिए जीवित साधन है इसके माध्यम से कृषि, समाज, देश का शारीरिक एवं मानसिक विकास संभव है।" सार्वजनिक ग्रंथालय देश के नागरिकों के हितार्थ शैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक संरचना में एक विशिष्ट भूमिका निभाते है। समाज के सामाजिक विकास में सार्वजनिक ग्रंथालय की भूमिका महत्वपूर्ण एवं अद्वितीय होती हैं। विद्यालय के ग्रंथालयों का विकास, छात्रों की ज्ञान क्षुधा को शान्त करने का सक्षम साधन हो सकता है। उक्त अध्ययन निकट भविष्य में शोध के क्षेत्र में कार्य करने हेतु एक दिशा–निर्देश का कार्य करेगा। उक्त अध्ययन आगामी अनुसंधान के लिए एक भूमिका तैयार करेगा इससे निम्न सुविधा प्राप्त वर्ग को भी उच्च वर्ग के बराबर खड़ा किया जा सकेगा। इससे शिक्षा एवं साक्षरता में गुणात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालयों के ग्रंथालयों के विकास से यहॉ के समाज के लोगों का समाज में रहते हुए आवश्यकता की पूर्ति हो जायेगा।

शोध में समस्याओं का पर्याप्त उत्तर, सरलत्म उत्तर तथा प्रत्यात्मक स्पष्टता पर पूर्ण ध्यान दिया है, साथ ही विशिष्टता व प्रमाणीकरण हेतु परीक्षण व योग्यता का स्पष्ट उल्लेख किया है, ताकि प्राप्त

आंकडों की सत्यता को प्रमाणित करना कठिन न हो। यहॉ दो मुख्य पांरपरिक प्रणालियों का चयन प्रारंभिक समंकों के संग्रहण हेतु किया गया है, सरलत्म प्रश्नावली एवं साक्षात्कार प्रश्नावली यह एक ऐसी तकनीक है, जिसके द्वारा हम उपयोगकर्त्ता एवं उनकी आवश्यकताओं के संबंध में स्वतंत्रता पूर्वक जान सकते हैं, प्रश्नावली में दुर्ग जिले के हायर सेकेण्ड्री स्कूलों में पुस्तकालय से आवश्यकताओं, विकास एवं उपयोग प्रक्रिया से संबंधित प्रश्नों के विवरणों का उल्लेख किया गया हैं। प्राप्त प्रश्नावली के आधार पर उपलब्ध तथ्यों, आंकडें एवं सामग्रियों को तुलनात्मक अध्ययन् का आधार बनाया गया है, अतः इस शोध में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के समंकों को एकत्रित कर विश्लेषण किया गया है, जिससे वस्तु स्थिति को ज्ञात किया जा सके व विभिन्न दृष्टिकोणों का सामान्यीकरण किया गया है।

परियोजना के लिये एक प्रश्नावली तैयार कर दुर्ग जिले के हाई स्कूल एवं हायर सेकेण्ड्री स्कूलों के पुस्तकालय से व्यक्तिगत साक्षात्कार के द्वारा आंकडे एकत्र किया। तत्पश्चात प्राप्त आंकडे का अवलोकन किया गया। अवलोकन करने के लिये माइक्रोसॉप्ट ऑफिस एक्सल (Microsoft Office Excel) में सारणीयन बनाया गया। अवलोकन होने के बाद प्राप्त आंकडे का विश्लेषण किया गया। तत्पश्चात् इन सभी प्राप्त आंकडों के आधार पर एक प्रतिवेदन तैयार किया गया है।

प्रस्तुत लधु शोध प्रतिवेदन को 04 अध्यायों में विभक्त किया गया है। अध्याय 0 के अंतगर्त प्रस्तावना, प्रथम अध्याय् में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालय एवं ग्रंथालय, द्वितीय अध्याय् में विद्यालय ग्रंथालय में उपलब्ध संसाधनों का विवरण, तृतीय अध्याय् के अंतगर्त ग्रंथालय द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं से संबंधित अध्ययन एवं चतुर्थ अध्याय में निष्कर्ष एवं सुझाव, संदर्भ ग्रन्थ सूची का विस्तृत वर्णन किया गया है।

13. Contribution to the Society

1. छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालयों के ग्रंथालयों के विकास से समाज के लोगों का समाज में रहते हुए उनकी समस्त आवश्यकता की पूर्ति हो जायेगा।
2. उक्त अध्ययन आगामी समय में समाज एवं सामाजिक जीवन, सामाजिक पहलुओं के स्तर को उॅचा उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हुए मील का पत्थर साबित होगा।
3. उक्त अध्ययन छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालयों के पुस्तकालय विकास की दिशा में सकारात्मक सिद्ध हो सकती है।
4. दुर्ग जिले के विद्यालयों के ग्रंथालयों के संपूर्ण विकास को एक नया आयाम मिलेगा जिससे ना केवल छत्तीसगढ़ बल्कि पूरे विश्व स्तर पर शोध के परिणामों से अनुसंधान कार्यो को बढ़ावा मिलेगा।
5. संबंधित अध्ययन विद्यालयों में पुस्तकालय के विकास से छात्रों, कर्मचारियों, एवं समाज के विकास में सहायक हो सकता है।

6. विद्यालयों में पुस्तकालय से सीखने, और व्यक्तिगत विकास के लिए ज्ञान, कौशल और स्वभाव प्राप्त करना जो कि पूरे जीवन के लिए उपयोगी साबित होगा।
7. सूचना और ज्ञान का विकास, एक विकासशील सामज में सूचना विशेषज्ञ की भूमिका, पढ़ने की आदतों का विकास, और एक सूचना समाज में सार्वजनिक पुस्तकालय की भूमिका के विकास में यह अध्ययन मील का पत्थर साबित होगा।

14. Whether any Ph. D Enrolled /Produced out of the Project : No

15. No. of Publication out of the Project : 02

SIGNATURE
OF PRINCIPAL INVESTIGATOR
Dr. OmPrakash Patel
Library Science

PRINCIPAL
PRINCIPAL
Shri Shankaracharya Mahavidyalaya
Junwani, BHILAI (C.G.)

U.G.C. CELL INCHARGE
Shri Shankaracharya Mahavidyalaya
Junwani, BHILAI (C.G.)

प्रकाशित शोध पत्र 1 एवं 2

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

ग्रंथालयों में उपलब्ध संसाधनो का तुल्नात्मक अध्ययन: दुर्ग जिले के विद्यालयों के विशेष संदर्भ में (सत्र 2008 से 2015 तक)

डॉ. ओमप्रकाश पटेल
ग्रंथपाल,
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, जुनवानी, भिलाई (छ.ग.)

सार (Abstract)

भारत में अब तक 19 राज्यों से अधिक में सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम पारित हो चुका है, जिसमें से छत्तीसगढ़ भी इस सूची में शामिल हो गया है। सन् 2008 को राज्य सरकार ने सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम पारित कर इस दिशा में एक नये युग की शुरुवात की है। छत्तीसगढ़ में 2008 के पुस्तकालय अधिनियम पारित होने के पश्चात् विद्यालयों में ग्रंथालय सुविधा की शुरूवात हो गयी है। छत्तीसगढ़ राज्य में वर्तमान में 13 विश्वविद्यालय, लगभग 52 अभियांत्रिकी महाविद्यालय, 42 पॉलिटेक्निक कॉलेज, एक राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, एक अंर्तराष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान, 09 चिकित्सा महाविद्यालय एवं 1 आई. आई. टी. उच्च शिक्षा प्रदान कर रहें है। दुर्ग जिले में प्राथमिक स्कूलों की संख्या 648, पुर्व प्राथमिक स्कूलों 352, हाई स्कूलों की संख्या 37 एवं हायरसेकेण्ड्री स्कूलों की संख्या 117 है। विद्यालयों में पुस्तकालय स्थापित कर पुस्तकों एवं अन्य पठनीय सामग्री का संग्रह किया जा रहा है, परंतु छात्रों को एक समुचित सुविधा उपलब्ध कराने में सक्षम नही हो पाया है। छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालयों के ग्रंथालयों के विकास से यहॉ के छात्रों की ज्ञान संबधी आवश्यकता की पूर्ति हो की जा सकती है।

प्रस्तावना (Introduction)

भारत में अब तक 19 राज्यों से अधिक में सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम पारित हो चुका है, जिसमें से छत्तीसगढ भी इस सूची में शामिल हो गया है। सन् 2008 की राज्य सरकार ने सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम पारित कर इस दिशा में एक नये युग की शुरुवात की है। छत्तीसगढ़ में 2008 के पुस्तकालय अधिनियम पारित होने के पश्चात् विद्यालयों में ग्रंथालय सुविधा की शुरूवात हो गयी है।

छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना 1 नवंबर 2000 को हुई है। छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना के बाद छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक एवं मात्रात्मक रूप से विकास हेतु मजबूत कदम उठाया है। सरकार ने विद्यालय शिक्षा के महत्व को जाना है और ग्रामीण एवं शहरी अंचल क्षेत्र में पारंपरिक एवं

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

नये विद्यालयों के शाखाओं के विकास को बढ़ावा दिया गया है। छत्तीसगढ़ राज्य में विद्यालयों का इतिहास नया नहीं हैं राज्य स्थापना के पूर्व भी बहुतायत संख्या में विद्यालय स्थापित हो चुके थे। छत्तीसगढ़ राज्य में वर्तमान में 13 विश्वविद्यालय, लगभग 52 अभियांत्रिकी महाविद्यालय, 42 पॉलिटेक्निक कॉलेज, एक राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, एक अंर्तराष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान एवं 09 चिकित्सा महाविद्यालय शिक्षा प्रदान कर रहें है।

ग्रंथालयों के प्रकार (Types of Library)

भारत में ग्रंथालयों की स्थापना तो प्राचीन समय से ही शुरू हो गई थी, लेकिन उस समय पाठ्य सामग्री एवं पाठक दोनों ही सीमित थे और उस समय ग्रंथालयों की स्थापना संग्रह कक्ष के रूप में की गई थी। लेकिन धीरे–धीरे ग्रंथालयों की अवधारणा में परिवर्तन आया और 20वीं शताब्दी में यह महसूस किया गया कि एक ही प्रकार के पुस्तकालय में सभी प्रकार की पाठकों की मांग को पूरा नहीं किया जा सकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार के ग्रंथालयों की स्थापना की गई। संग्रह और पाठकों की विभिन्नता के अनुसार पुस्तकालयों को निम्नानुसार तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है:–

1. शैक्षणिक पुस्तकालय,
2. सार्वजनिक पुस्तकालय एवं
3. विशिष्ट पुस्तकालय।

दुर्ग जिले में विद्यालय एवं शिक्षा

दुर्ग जिले में प्राथमिक स्कूलों की संख्या 648, पुर्व प्राथमिक स्कूलों 352, हाईस्कूलों की संख्या 37 एवं हायरसेकेण्ड्री स्कूलों की संख्या 117 है। दुर्ग जिले के अंतगर्त मुख्य रूप से तीन ब्लॉक आते है जिसमें पाटन, धमधा एवं दुर्ग प्रमुख है।

अध्ययन का उददेश्य (Objective of Study)

छत्तीसगढ राज्य के हाई स्कूल एवं हायरसेकेण्ड्री स्कूलों में ग्रंथालय के स्थिति का अवलोकन करना है, इस अध्ययन के निम्न उददेश्य है:–

- विद्यालय में पुस्तकालय की उपयोगिता का अध्ययन करना।
- कर्मचारी संरचना एवं वर्तमान ताकत (Strength) का पता लगाने हेतु।

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

- पुस्तकालय की वर्तमान संसाधन, संग्रह की कमजोरी एवं ताकत का पता लगाना।
- पुस्कालयों को प्राप्त बजट का आंकलन करने हेतु।
- पुस्तकालय में पुस्तकों की उपलब्धता एवं उपयोग की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि (Methodology)

दुर्ग जिले के हाईस्कूल एवं हायरसेकेण्ड्री स्कूलों में स्थित ग्रंथालय के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। ग्रंथालयों से जानकारी प्राप्त करने हेतु एक 18 बिन्दु की प्रश्नावली का निर्माण किया गया। परियोजना में मैंने केवल उन सरकारी स्कूलों के विद्यालयों को शामिल किया है जहॉ पर राज्य शासन के नियमानुसार ग्रंथालय का संचालन किया जा रहा है। इसके अंतगर्त जिले के हाईस्कूल एवं हायरसेकेण्ड्री स्कूल में ही पुस्तकालय का संचालन किया जा रहा है, जो कि मेरे अध्ययन के क्षेत्र है।

दुर्ग जिले के विद्यालयों का विवरण

क्रमांक	स्कूलों के नाम	स्कूलों की संख्या
01	हाईस्कूल	37
02	हायरसेकेण्ड्री स्कूल	117
कुल		**154**

ग्रंथालयों के स्टॉफ का विवरण

दुर्ग जिले के ब्लॉक	स्टॉफ का विवरण		
	प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	प्रतिषत
दुर्ग	15	85	100
धमधा	13	87	
पाटन	17	83	

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

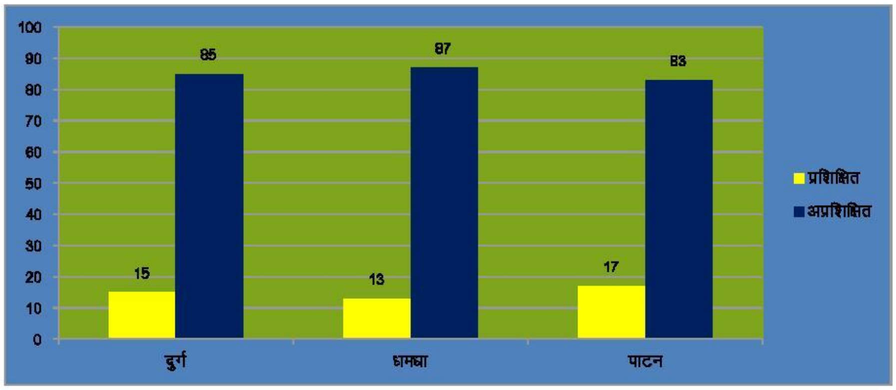

सारणी में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालय के ग्रंथालयों के स्टॉफ का विवरण प्रस्तुत किया गया है, उक्त सारणी से प्रशिक्षित एवं अप्रतिशिक्षित स्टॉफ के बारे में ज्ञात होता है कि छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के क्रमशः दुर्ग ब्लॉक के विद्यालयों में 15 प्रतिशत प्रशिक्षित एवं 85 अप्रशिक्षित स्टॉफ है, धमधा में 13 प्रतिशत प्रशिक्षित एवं 87 अप्रशिक्षित स्टॉफ एवं पाटन क्षेत्र में 17 प्रतशित प्रशिक्षित एवं 83 अप्रशिक्षित स्टॉफ है।

उपयोगकर्त्ताओं का विवरण

दुर्ग जिले के ब्लाक	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015
दुर्ग	3920	4088	4480	5600	8400	8670	9200	9452
धमधा	2380	2482	2720	2940	3100	3235	4200	4450
पाटन	2030	2117	2320	2900	3400	3525	3750	3960

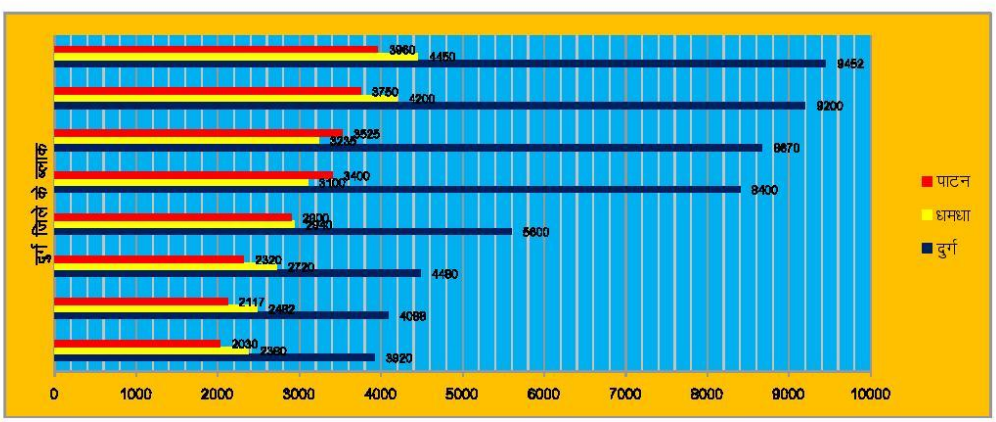

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

सारणी में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालय के ग्रंथालयों के उपयोगकर्त्ताओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है, उक्त सारणी में 2008 से 2015 तक कुल प्राप्त जानकारी के आधार पर उपयोगकर्त्ताओं के बारे में ज्ञात होता है कि दुर्ग ब्लॉक में 2008 में कुल विद्यालयों में उपयोगकर्त्ताओं की संख्या 3920 था जो कि 2009 में 4088, 2010 में 4480, 2011 में 5600, 2012 में 8400, 2013 में 8670, 2014 में 9200 एवं 2015 में 9452 हो गया है, इसी प्रकार धमधा ब्लॉक में 2008 में कुल विद्यालयों में उपयोगकर्त्ताओं की संख्या 2380 था जो कि 2009 में 2482, 2010 में 2720, 2011 में 2940, 2012 में 3100, 2013 में 3235, 2014 में 4200 एवं 2015 में 4450 हो गया है, इसी प्रकार पाटन ब्लॉक में 2008 में कुल विद्यालयों में उपयोगकर्त्ताओं की संख्या 2030 था जो कि 2009 में 2117, 2010 में 2320, 2011 में 2900, 2012 में 3400, 2013 में 3525, 2014 में 3750 एवं 2015 में 3960 हो गया है।

ग्रंथालयों के द्वारा पुस्तकों की खरीदी का विवरण

दुर्ग जिले के ब्लॉक	पुस्तकों की खरीदी (प्रत्येक वर्ष)		
	हॉ	नहीं	प्रतिशत
दुर्ग	72	28	100
धमधा	65	35	
पाटन	69	31	

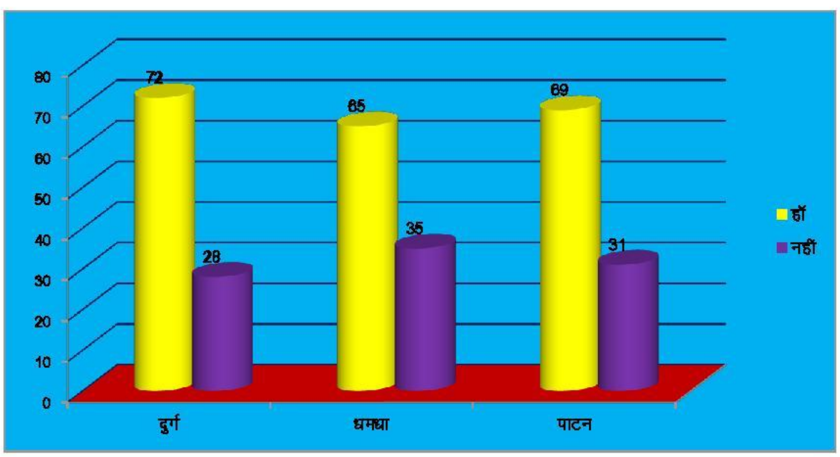

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

सारणी में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालय के ग्रंथालयों के प्रत्येक वर्ष के पुस्तकों के खरीदी का विवरण प्रस्तुत किया गया है, उक्त सारणी से ज्ञात होता है कि छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के क्रमशः दुर्ग ब्लॉक के विद्यालयों में से 72 प्रतिशत ग्रंथालयों में पुस्तकों की खरीदी प्रत्येक वर्ष होती है एवं 28 प्रतिशत विद्यालयों में प्रत्येक वर्ष पुस्तकों की खरीदी प्रत्येक वर्ष किसी न किसी कारण से नही होती है। धमधा ब्लॉक के विद्यालयों में से 65 प्रतिशत ग्रंथालयों में पुस्तकों की खरीदी प्रत्येक वर्ष हो रही है एवं 35 प्रतिशत विद्यालयों में प्रत्येक वर्ष पुस्तकों की खरीदी प्रत्येक वर्ष किसी न किसी कारण से नही होती है। पाटन ब्लॉक के विद्यालयों में से 69 प्रतिशत ग्रंथालयों में पुस्तकों की खरीदी प्रत्येक वर्ष होती है एवं 31 प्रतिशत विद्यालयों में प्रत्येक वर्ष पुस्तकों की खरीदी किसी न किसी कारण से नही हो पा रही है।

परिणामः—

- छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के परिक्षेत्र में उपलब्ध 154 स्कूलों में ग्रंथालयों से सम्बन्धित आंकड़ें प्राप्त करने के लिये प्रश्नावली/साक्षात्कार के माध्यम से संपर्क किया गया जिसमें से 119 (77.27 प्रतिशत) विद्यालयों से जानकारी प्राप्त हुए एवं 35 (22.73 प्रतिशत) विद्यालय ग्रंथालयों से जानकारी प्राप्त नही हुए। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन हेतु 119 विद्यालय के ग्रंथालयों को अध्ययन का आधार बनाया गया है।
- प्रशिक्षित ग्रंथपाल की संख्या में कमी देखी गयी है। प्रायः स्कूलों में व्या. पंचायत अन्य विषयों के षिक्षकों के द्वारा ग्रंथालय का संचालन किया जा रहा है।
- छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के क्रमशः दुर्ग, धमधा एवं पाटन क्षेत्र के सभी विद्यालय ग्रंथालयों का स्वयं का भवन नही है बल्कि यह विद्यालय के एक कक्ष में स्थित है।
- छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के क्रमशः दुर्ग ब्लॉक के विद्यालयों में 15 प्रतिशत प्रशिक्षित एवं 85 अप्रशिक्षित स्टॉफ है, धमधा में 13 प्रतशित प्रशिक्षित एवं 87 अप्रशिक्षित स्टॉफ एवं पाटन क्षेत्र में 17 प्रतिशत प्रशिक्षित एवं 83 अप्रशिक्षित स्टॉफ है।
- दुर्ग ब्लॉक में 2008 में कुल विद्यालयों में उपयोगकर्त्ताओं की संख्या 3920 था जो कि 2009 में 4088, 2010 में 4480, 2011 में 5600, 2012 में 8400, 2013 में 8670, 2014 में 9200 एवं 2015 में 9452 हो गया है, इसी प्रकार धमधा ब्लॉक में 2008 में कुल विद्यालयों में उपयोगकर्त्ताओं की संख्या 2380 था जो कि 2009 में 2482, 2010 में 2720, 2011 में 2940, 2012 में 3100, 2013 में 3235, 2014 में 4200 एवं

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

2015 में 4450 हो गया है, इसी प्रकार पाटन ब्लॉक में 2008 में कुल विद्यालयों में उपयोगकर्त्ताओं की संख्या 2030 था जो कि 2009 में 2117, 2010 में 2320, 2011 में 2900, 2012 में 3400, 2013 में 3525, 2014 में 3750 एवं 2015 में 3960 हो गया है। इससे स्पष्ट है कि उपयोगकर्त्ताओं की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

- छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के क्रमशः दुर्ग ब्लॉक के विद्यालयों में से 72 प्रतिशत ग्रंथालयों में पुस्तकों की खरीदी प्रत्येक वर्ष होती है एवं 28 प्रतिशत विद्यालयों में प्रत्येक वर्ष पुस्तकों की खरीदी प्रत्येक वर्ष किसी न किसी कारण से नही होती है। धमधा ब्लॉक के विद्यालयों में से 65 प्रतिशत ग्रंथालयों में पुस्तकों की खरीदी प्रत्येक वर्ष हो रही है एवं 35 प्रतिशत विद्यालयों में प्रत्येक वर्ष पुस्तकों की खरीदी प्रत्येक वर्ष किसी न किसी कारण से नही होती है। पाटन ब्लॉक के विद्यालयों में से 69 प्रतिशत ग्रंथालयों में पुस्तकों की खरीदी प्रत्येक वर्ष होती है एवं 31 प्रतिशत विद्यालयों में प्रत्येक वर्ष पुस्तकों की खरीदी प्रत्येक वर्ष किसी न किसी कारण से नही होती है।

निष्कर्षः–

भारत अब दुनिया मे सबसे अधिक विकासशील देशों में से एक है। यह ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी महती भूमिका का समय समय पर लोहा मनवाता रहा है। भारतीय संविधान का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को न्याय, स्वतंत्रता, शिक्षा, समानता एवं मौलिक अधिकार प्राप्त करने के लिये नई सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना है।

छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालयों के ग्रंथालयों के विकास से यहॉ के छात्रों की ज्ञान संबधी आवश्यकता की पूर्ति हो जायेगा। विद्यालयों में पुस्तकालय स्थापित कर पुस्तकों एवं अन्य सामग्री का संग्रह किया जा रहा है, परंतु छात्रों को एक समुचित सुविधा उपलब्ध कराने में सक्षम नही हो पाया है। अध्ययन से यह तथ्य सामने आया है कि जिस उदद्देश्य के साथ विद्यालय में पुस्तकालयों की स्थापना की गयी है वह अभी कोसो दूर है।

संदर्भ–ग्रंथः–

- गुप्ता एवं गुप्ता, प्रबन्ध सूचना प्रणाली एवं निगम संचार. दिल्लीः श्री महावीर बुक डिपो, 2012. 112–143।
- गुप्ता, बीना, एवं सोनकर, शरद कुमार. "इंटरनेट एवं ग्रंथालय सेवाएं." ग्रंथालय विज्ञान. 41 (2010): 41, 35।
- झा, विभाष कुमार., नैयर., सौम्या, छत्तीसगढ़ समग्र. रायपुरः छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2013. 163–173।
- वर्मा, भगवान सिंह. छत्तीसगढ़ का इतिहास. भोपालः मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2003. 25–35।
- सक्सेना, एल. एस. पुस्तकालय संगठन तथा व्यवस्थापन. भोपालः मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी. 1989. 1–12।
- त्रिपाठी, संजय., त्रिपाठी, चंदन. छत्तीसगढ़ वृहद् संदर्भ. आगराः उपकार प्रकाशन, 2012. 172–179।

———————————————

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Issue-18, Vol-04, April to June 2017

Vidyawarta®

International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

www.vidyawarta.com

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

Vidyawarta®

International Multilingual Research Journal

Apr. To June 2017
Issue-18, Vol-04

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

45

छत्तीसगढ़ सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम पारित होने के पश्चात् दुर्ग जिले के विद्यालयीन ग्रंथालयों द्वारा प्रदत्त सेवाओं का तुल्नात्मक अध्ययन

डॉ. ओमप्रकाश पटेल
ग्रंथपाल, श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, भिलाई, छ.ग.

डॉ. वीरेन्द्र कुमार सिंह
क्रीडाधिकारी, श्री शंकराचार्य महाविद्यालय,
भिलाई छ.ग.

****

सार (Abstract)

छत्तीसगढ़ में २००८ के पुस्तकालय अधिनियम पारित होने के पश्चात् विद्यालयों में ग्रंथालय सुविधा की शुरूवात हो गयी है। छत्तीसगढ़ राज्य में वर्तमान में १३ विश्वविद्यालय, लगभग ५२ अभियांत्रिकी महाविद्यालय, ४२ पॉलिटेक्निक कॉलेज, लगभग २५० महाविद्यालय, एक राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, एक अंर्तराष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान एवं ०९ चिकित्सा महाविद्यालय शिक्षा प्रदान कर रहें है। दुर्ग जिले में प्राथमिक स्कूलों की संख्या ६४८, पुर्व प्राथमिक स्कूलों ३५२, हाई स्कूलों की संख्या ३७ एवं हायरसेकेण्ड्री स्कूलों की संख्या ११७ है। विद्यालय ग्रंथालय एक ऐसा माध्यम है जहाँ सभी प्रकार की जानकारी उपलब्ध होनी चाहिए, जहाँ से ज्ञान प्राप्त करके सामान्य से सामान्य छात्र भी बुद्धिमान बन सकता है, तथा अपने बुद्धि को सही क्षेत्र में उपयोग करने से केवल उस क्षेत्र का ही नही बल्कि राज्य के विकास के साथ–साथ देश के विकास में भी सहभागी बन सकता है। इसलिए राज्य में विद्यालय ग्रंथालय के विकास को विशेष महत्व देना चाहिए।

प्रस्तावना (Introduction)

छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना १ नवंबर २००० को हुई है। छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना के बाद छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक एवं मात्रात्मक रूप से विकास हेतु मजबूत कदम उठाया है। सरकार ने विद्यालय शिक्षा के महत्व को जाना है और ग्रामीण एवं शहरी अंचल क्षेत्र में पारंपरिक एवं नये विद्यालयों के शाखाओं के विकास को बढ़ावा दिया गया है। छत्तीसगढ़ राज्य में विद्यालयों का इतिहास नया नहीं हैं राज्य स्थापना के पूर्व भी बहुतायत संख्या में विद्यालय स्थापित हो चुके थे। छत्तीसगढ़ राज्य में वर्तमान में १३ विश्वविद्यालय, लगभग ५२ अभियांत्रिकी महाविद्यालय, ४२ पॉलिटेक्निक कॉलेज, लगभग २५० महाविद्यालय, एक राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, एक अंर्तराष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान एवं ०९ चिकित्सा महाविद्यालय शिक्षा प्रदान कर रहें है।

दुर्ग जिले में विद्यालय एवं शिक्षा

छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना के पूर्व यहाँ विद्यालयीन शिक्षा का विकास का कार्य जारी था एवं पर्याप्त मात्रा में विद्यालय स्थापित हो चुके थे। राज्य की स्थापना के बाद सरकार का ध्यान विद्यालयों में गुणात्मक शिक्षा को बढ़ावा देने के उददेश्य से प्रत्येक विद्यालयों के लिए एक समृद्ध पुस्तकालय की स्थापना का निर्णय लिया गया और इसके संचालन के लिए प्रशिक्षित ग्रंथपाल की नियुक्ति का निर्णय पंचायत विभाग के द्वारा लिया गया इसी तारतम्य में २००८ में पुस्तकालय अधिनियम पारित किया जो विद्यालयों के साथ साथ प्रत्येक ग्राम पंचायत में ग्रंथालय पर जोर देता है। दुर्ग जिले में प्राथमिक स्कूलों की संख्या ६४८, पुर्व प्राथमिक स्कूलों ३५२, हाई स्कूलों की संख्या ३७ एवं हायरसेकेण्ड्री स्कूलों की संख्या ११७ है। दुर्ग जिले के अंतगर्त मुख्य रूप से तीन ब्लॉक आते है जिसमें पाटन, धमधा एवं दुर्ग प्रमुख है।

अध्ययन का उददेश्य (Objective of Study)

छत्तीसगढ राज्य के हाई स्कूल एवं हायरसेकेण्ड्री स्कूलों के ग्रंथालय द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं का अवलोकन करना है, इस अध्ययन के निम्न उददेश्य है :–

• विद्यालय में पुस्तकालय की उपयोगिता का अध्ययन करना।

• पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं का पता लगाने हेतु।

• पुस्तकालय की वर्तमान कार्यप्रणाली, संसाधन एवं सेवाओं का पता लगाना।

• पुस्तकालय में सेवाओं की उपलब्धता एवं उपयोग की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि (Methodology)

दुर्ग जिले के हाईस्कूल एवं हायरसेकेण्ड्री स्कूलों में स्थित ग्रंथालय के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। ग्रंथालयों से जानकारी प्राप्त करने हेतु एक १८ बिन्दु की प्रश्नावली का निर्माण किया गया। परियोजना में मैंने केवल उन सरकारी स्कूलों के विद्यालयों को शामिल किया है जहाँ पर राज्य शासन के नियमानुसार ग्रंथालय का संचालन किया जा रहा है। इसके अंतगर्त जिले के हाईस्कूल एवं हायरसेकेण्ड्री स्कूल में ही पुस्तकालय का संचालन किया जा रहा है, जो कि मेरे अध्ययन के क्षेत्र है।

क्रमांक	स्कूलों के नाम	स्कूलों की संख्या
01	हाई स्कूल	37
02	हायरसेकेण्ड्री स्कूल	117
कुल		154

ग्रंथालय में मंगाये जाने वाले पत्रिकाओं का विवरण

दुर्ग जिले के ब्लॉक	प्रत्येक माह मंगवाये जाने वाले पत्रिकाओं की संख्या			
	0–5	6–10	नहीं	प्रतिशत
दुर्ग	62	29	09	100
धमधा	79	11	10	100
पाटन	45	07	48	100

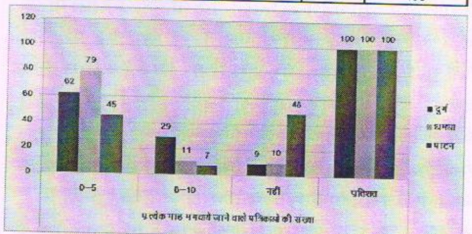

सारणी में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालय के ग्रंथालयों में प्रत्येक माह मंगाये जाने वाले पत्रिकाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है, उक्त सारणी से विद्यालयों में मगाये जाने वाले पत्रिका के बारे में ज्ञात होता है कि छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के क्रमशः ५ पत्रिका दुर्ग ब्लॉक के ६२ प्रतिशत विद्यालयों में, धमधा ब्लॉक के ७९ प्रतिशत विद्यालयों में, पाटन ब्लॉक के ४५ प्रतिशत विद्यालयों में, ६ से १० पत्रिका दुर्ग ब्लॉक के २९ प्रतिशत विद्यालयों में, धमधा ब्लॉक के ११ प्रतिशत विद्यालयों में, पाटन ब्लॉक के ०७ प्रतिशत विद्यालयों में पत्रिकाएँ मंगायी जा रही है। दुर्ग ब्लॉक के ९ प्रतिशत, धमधा के १० एवं पाटन के ४८ प्रतिशत विद्यालयो के ग्रंथालयो में १ भी पत्रिका नही मंगायी जा रही है।

ग्रंथालय में मंगाये जाने वाले समाचार पत्रों का विवरण

दुर्ग जिले के ब्लाक	हिन्दी समाचार पत्रों की संख्या (प्रतिदिन)				अग्रेंजी समाचार पत्रों की संख्या (प्रतिदिन)			
	0–1	2–3	नहीं	प्रतिशत	0–1	2–3	नहीं	प्रतिशत
दुर्ग	22	78	–	100	18	–	82	100
धमधा	68	32	–	100	14	–	86	100
पाटन	79	21	–	100	05	–	95	100

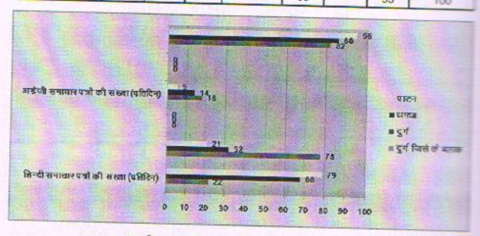

सारणी में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालय ग्रंथालयों में प्रतिदिन मंगाये जाने वाले समाचार पत्रों का विवरण प्रस्तुत किया गया है, उक्त सारणी से विद्यालयों में मगाये जाने वाले समाचार पत्र के बारे में ज्ञात होता है कि छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के क्रमशः १ हिन्दी समाचार पत्र, दुर्ग ब्लॉक के २२ प्रतिशत विद्यालयों में, धमधा ब्लॉक के ६८ प्रतिशत विद्यालयों में, पाटन ब्लॉक के विद्यालयों ७९ प्रतिशत में, २ से ३ समाचार पत्र दुर्ग ब्लॉक के ७८ प्रतिशत विद्यालयों में, धमधा ब्लॉक के ३२ प्रतिशत विद्यालयों में, पाटन ब्लॉक के २१ प्रतिशत विद्यालयों के ग्रथालयों में मंगायी जा रही है। १ अंग्रेजी समाचार पत्र दुर्ग ब्लॉक के १८ प्रतिशत विद्यालयों में, धमधा ब्लॉक के १४ प्रतिशत विद्यालयों में, पाटन ब्लॉक के ५ प्रतिशत विद्यालयों में मंगायी जा रही है। शेष दुर्ग ब्लॉक के ८२ प्रतिशत, धमधा के ८६ एवं पाटन के ९५ प्रतिशत विद्यालयो के ग्रंथालयो में १ भी अंग्रेजी समाचार पत्र नही मंगायी जा रही है।

दुर्ग जिले के ग्रंथालयों के खुलने के समय का विवरण

	पुस्तकालय का समय				
	सामान्य दिनों में			अवकाश एवं अन्य दिनों में	प्रतिशत
दुर्ग जिले के ब्लाक	1 घंटे	2 से 3 घंटे	4 से 6 घंटे		
दुर्ग	79	08	13	–	100
धमधा	82	07	11	–	100
पाटन	80	05	15	–	100

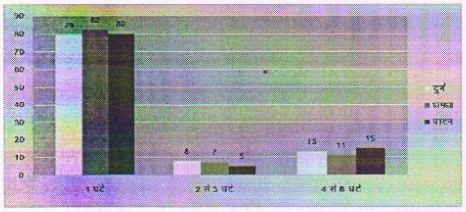

सारणी में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालय के ग्रंथालयों के पाठको हेतु खुलने के समय का विवरण प्रस्तुत किया गया है, उक्त सारणी से विद्यालय में ग्रथालयों के समय—सारिणी के बारे में ज्ञात होता है कि छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालयों के ग्रंथालयों में क्रमश: १ घंटे दुर्ग ब्लॉक के ७९ प्रतिशत विद्यालयों पाठको हेतु खुले रहते है, धमधा ब्लॉक के ८२ प्रतिशत विद्यालय, पाटन ब्लॉक के ८० प्रतिशत विद्यालय, २ से ३ घंटे दुर्ग ब्लॉक के ०८ प्रतिशत विद्यालय, धमधा ब्लॉक के ०७ प्रतिशत विद्यालय, पाटन ब्लॉक के ०५ प्रतिशत विद्यालयों के ग्रंथालय खुले रहते है। ४ से ६ घंटे दुर्ग ब्लॉक के १३ प्रतिशत विद्यालय, धमधा ब्लॉक के ११ प्रतिशत विद्यालय, पाटन ब्लॉक के १५ प्रतिशत विद्यालयों के ग्रंथालय खुले रहते है। अध्ययन से ये भी तथ्य सामने आया है कि कोई भी ग्रंथालय अवकाश एवं अन्य दिनों में किसी भी प्रकार से पाठको हेतु खुलते नही है।

परिणाम:—

• छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के परिक्षेत्र में उपलब्ध १५४ स्कूलों में ग्रंथालयों से सम्बन्धित आंकड़ें प्राप्त करने के लिये प्रश्नावली/साक्षात्कार के माध्यम से संपर्क किया गया जिसमें से ११९ (७७.२७ प्रतिशत) विद्यालयों से जानकारी प्राप्त हुए एवं ३५ (२२.७३ प्रतिशत) विद्यालय ग्रंथालयों से जानकारी प्राप्त नही हुए। इसलिए प्रस्तुत लघु शोध परियोजना हेतु ११९ विद्यालय के ग्रंथालयों को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

• प्रशिक्षित ग्रंथपाल की संख्या में कमी देखी गयी है। प्राय: स्कूलों में व्या. पंचायत अन्य विषयों के शिक्षकों के द्वारा ग्रंथालय का संचालन किया जा रहा है।

• छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के क्रमश: दुर्ग, धमधा एवं पाटन क्षेत्र के सभी विद्यालय ग्रंथालयों में प्रदान की जाले वाली सेवाओं की स्थिति में दुर्ग जिले की स्थिति मजबूत है।

• छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के क्रमश: ५ पत्रिका दुर्ग ब्लॉक के ६२ प्रतिशत विद्यालयों में, धमधा ब्लॉक के ७९ प्रतिशत विद्यालयों में, पाटन ब्लॉक के ४५ प्रतिशत विद्यालयों में, ६ से १० पत्रिका दुर्ग ब्लॉक के २९ प्रतिशत विद्यालयों में, धमधा ब्लॉक के ११ प्रतिशत विद्यालयों में, पाटन ब्लॉक के ०७ प्रतिशत विद्यालयों में पत्रिकाएँ मंगायी जा रही है। दुर्ग ब्लॉक के ९ प्रतिशत, धमधा के १० एवं पाटन के ४८ प्रतिशत विद्यालयो के ग्रंथालयो में १ भी पत्रिका नही मंगायी जा रही है।

• दुर्ग जिले के क्रमश: १ हिन्दी समाचार पत्र, दुर्ग ब्लॉक के २२ प्रतिशत विद्यालयों में, धमधा ब्लॉक के ६८ प्रतिशत विद्यालयों में, पाटन ब्लॉक के विद्यालयों ७९ प्रतिशत में, २ से ३ समाचार पत्र दुर्ग ब्लॉक के ७८ प्रतिशत विद्यालयों में, धमधा ब्लॉक के ३२ प्रतिशत विद्यालयों में, पाटन ब्लॉक के २१ प्रतिशत विद्यालयों के ग्रथालयों में मंगायी जा रही है। १ अंग्रेजी समाचार पत्र दुर्ग ब्लॉक के १८ प्रतिशत विद्यालयों में, धमधा ब्लॉक के १४ प्रतिशत विद्यालयों में, पाटन ब्लॉक के ५ प्रतिशत विद्यालयों में मंगायी जा रही है। शेष दुर्ग ब्लॉक के ८२ प्रतिशत, धमधा के ८६ एवं पाटन के ९५ प्रतिशत विद्यालयो के ग्रंथालयो में १ भी अंग्रेजी समाचार पत्र नही मंगायी जा रही है।

• छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालय के ग्रंथालयों के खुलने के समय का विवरण प्रस्तुत किया गया है, उक्त सारणी से विद्यालय में ग्रथालयों के समय—सारिणी के बारे में ज्ञात होता है कि छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालयों के ग्रंथालयों में क्रमश: १ घंटे दुर्ग ब्लॉक के ७९ प्रतिशत विद्यालयों पाठको हेतु खुले रहते है, धमधा ब्लॉक के ८२ प्रतिशत विद्यालय, पाटन ब्लॉक के ८० प्रतिशत विद्यालय, २ से ३ घंटे दुर्ग ब्लॉक के ०८ प्रतिशत विद्यालय, धमधा ब्लॉक के ०७ प्रतिशत विद्यालय, पाटन ब्लॉक के ०५ प्रतिशत विद्यालयों के ग्रंथालय खुले रहते है। ४ से ६ घंटे दुर्ग ब्लॉक के १३ प्रतिशत विद्यालय, धमधा ब्लॉक के ११

प्रतिशत विद्यालय, पाटन ब्लॉक के १५ प्रतिशत विद्यालयों के ग्रंथालय खुले रहते है।

निष्कर्ष:—

भारत की स्वतंत्रता के ६९ वर्षो के पश्चात् भी सार्वजनिक पुस्तकालय का विस्तार नही हो पाया है। देश के कई राज्यों में सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम पारित भी नही हो पाया है, जो कि शिक्षा के निम्नस्तर तक पहुँच के लिए नितॉत आवश्यक है। .सार्वजनिक पुस्तकालय आबादी वाले स्थान पर स्थापित किये जाते रहे है जो कि एक बहुत बडे जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। ये ज्ञान के केन्द्र होते है जो आजीवन जनता को सीखने की प्रेरणा देते है।

इस प्रकार कहा सकता है कि विद्यालय ग्रंथालय एक ऐसा माध्यम है जहॉ सभी प्रकार की जानकारी उपलब्ध होनी चाहिए, जहॉ से ज्ञान प्राप्त करके सामान्य से सामान्य छात्र भी बुद्धिमान बन सकता है, तथा अपने बुद्धि को सही क्षेत्र में उपयोग करने से केवल उस क्षेत्र का ही नही बल्कि राज्य के विकास के साथ—साथ देश के विकास में भी सहभागी बन सकता है। इसलिए राज्य में विद्यालय ग्रंथालय के विकास को विशेष महत्व देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ:—

• झा, विभाष कुमार., नैयर., सौम्या, छत्तीसगढ़ समग्र. रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, २०१३. १६३—१७३.

• वर्मा, भगवान सिंह. छत्तीसगढ़ का इतिहास. भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, २००३. २५—३५.

• सक्सेना, एल. एस. पुस्तकालय संगठन तथा व्यवस्थापन. भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी. १९८९. १—१२.

• Sivadas. K.K. Library Management. Delhi: A.P.H. Pub. 2010. 155-156.

• Ranaganathan, S.R. Library Manual for School, College and Public Libraries. New Delhi: Ess and Ess Pub. 2012.

• Tiwari, Purushottam. Organisation and Development of Libraries. Delhi: A.P.H. Pub. 2012.10-12.

• Venkatappaiah, Velaga. Madhusudhan, M. Public Library Legislation in The New Millennium. Delhi: Book Bell Pub., 2006.

❑❑❑

46

समकालीन हिन्दी कविताओं में बाजारवाद

प्रा. डॉ. सुनील एम. पाटिल
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय
शिरपूर जिला धुलियाँ

****

कविता मूलत: युग संदर्भो की देन होती है। उसमें अतीत के चित्रण और भविष्य के संकेत भी युग संदर्भ से जुडकर ही आते है। यह कहना उचित होगा कि प्रत्येक रचना समकालीन होती है। वास्तव में समकालीन का अर्थ है - अपने समय का समसामयिकता और समयकालीनता में अंतर है। एक समय और एक कालखण्ड में रहना या जीना दोनों अलग-अलग स्थितियाँ है। समकालीनता का पर्याय नही है समसामायिकता विशेष वर्तमान बोध ही समकालीनता को अभिव्यक्ति देता है।

'समकालीन' शब्द अंग्रेजी के कांटेम्परेरी के समानार्थी शब्द के रूप में हिंदी में प्रयुक्त हुआ है। पहले सीमित अर्थ में प्रयोग होता था। अब समकालीन शब्द का प्रयोग वर्तमान के लिए किया जाने लगा अर्थात वर्तमान संदर्भ में मौजूद और सार्थक होता है, वह समकालीन है। समकालीनता के संदर्भ में कबीर की यह परिभाषा एक सार्वकालिक और शाश्वत सत्य है। यह जलना क्रुर यथार्थ की ज्वाला से जूझने का पर्याय है। स्वयम् को जलाकर अन्तस् में जो प्रकाश आता है। उस प्रकाश में रचनाकार सम्पूर्ण सामाजिक घात-प्रतिघात, विसंगतियों, वेदनाओं, विडम्बनाओं को अपलक निहारता हुआ चोटे खाता है। ये चोट खाना भविष्य के लिए अपराजेय संकल्प का आधार बनाता है।

समकालीन कविता के सामने सबसे बडा संकट यह है कि कविता की मान-प्रतिष्ठा तेजी से घट रही है। कविता का यह संकट मात्र एक साहित्यिक विधा का संकट नही है। कविता का समकालीन संकट वस्तुत: मनुष्यता का संकट है। आज कविता का परिदृश्य संकटग्रस्त नजर आता है। कविता के मर जाने से मनुष्य का क्या-क्या खो जाता है। कविता क्या है? इन सब प्रश्नों का जबाब काल के अनुसार देते रहे है। किसी भी काल में कविता लिखना आसान काम नही है। कविता कवि का सिर्फ पसीना नही चाहती, उसके रक्त-माँस पर पलती है।